के इस समुच्चय के रूप में सम्पूर्ण प्राकृत सृष्टि के स्वरूप को देखता है, वह परमात्मा की स्थिति को भी देख सकता है और इस प्रकार वैकुण्ठ-जगत् में प्रवेश के योग्य हो जाता है। यह तत्त्व गम्भीर चिन्तन-मनन और साक्षात्कार का विषय है। अतएव गुरुदेव के आश्रय में इस अध्याय को पूर्ण रूप से हृदय में धारण कर लेना चाहिए।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे प्रकृतिपुरुषविवेकयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः।।१३।।

इति भक्तिवेदान्त भाष्ये त्रयोदशोऽध्यायः।।